P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-4* ISSUE-8* April- 2017
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

Editorial Board - April -2017

Executive Board

PATRON
Dr. M.D. Pathak
Chairman, Centre for Research & Development of Waste & Marginal Land
Ex. Director General, U.P. Council of Agriculture Research, U.P.
Ex. Director, Research and Training, International Rice Research Institute, Manila, Philipines
pathakmd1@gmail.com

EDITOR
Dr. Rajeev Misra
Secretary,
Social Research Foundation, Kanpur
Indra.rajeev@gmail.com

EDITOR-IN -CHIEF
Dr. Asha Tripathi
Senior Vice-President,
Social Research Foundation, Kanpur
asha23346@gmail.com

EDITORIAL-ADVISORY BOARD

History
Dr. Surendra D. Soni
Rajkiya Lohiya Mahavidyalaya, Churu
Dr. Harish Kumar
Malwa College, Bondli (Samrala)

Hindi
Manjula Sharma
T.D.B. College, Raniganj
Dr. Kusum Kunja Malakar
Cotton College, Guwahati

Political Science
Dr. Krishna Kumar
BPSMV University, Haryana
Dr. Pravesh Pandey
ShriGuruNanakMahila Mahavidyalaya, Jabalpur

Sociology
Dr. Asha Tripathi
Mahila Mahavidyalaya, Kanpur
asha23346@gmail.com
Dr. Prabha Pant
G.B. Pant University of Agriculture & Technology, Pant Nagar

Ayurveda Science
Prof. Mahesh Vyas
M S M Institute of Ayurveda, BPSMV Khanpur, Kalan, Sonipat Haryana
Dr. Ranjeep Kumar Dass
Govt. Ayurvedic College, Raipur,Chhattisgarh

Psychology
Dr. Uma Mittal
University of Rajsthan, Rajsthan
Dr. Chandra Shekhar
University of Jammu, Jammu-Tawi, J&K

Home Science
Dr. Deepshikha Pandey
C.R.D. P.G.College,Gorakhpur
Dr. Kanak Mishra
Saraswati Vidya Mandir Mahila Mahavidyalaya,Gorakhpur

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-4* ISSUE-8* April- 2017
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

सम्पादकीय.....

सुधी पाठको,

मित्रों, भारतीय शिक्षा की त्रासदी यह है कि सत्तासीन व सत्ता से बाहर सभी राजनेता व शिक्षाविद् इसके महत्व और मानव–निर्माण के महत्व को स्वीकार तो करते हैं किन्तु इस तरफ कोई ध्यान नहीं देते– यहाँ तक कि इसकी उपेक्षा भी करते रहे हैं। आर्थिक विकास की तुलना में हम विकास की तुलना में हम विकास के इस सर्वोत्तम साधन को बहुत गौण स्थान देते रहे हैं। निःसन्देह प्राथमिक शिक्षा को राष्ट्र के विकास की नींव माना जाता है लेकिन वही क्षेत्र सबसे ज्यादा उपेक्षित रहा है। अपने ही प्रदेश में प्राथमिक विद्यालयों की हालत किसी से छुपी नहीं है। लगभग 40 से 50 प्रतिशत शिक्षकों के पद रिक्त चल रहे हैं। परिणाम यह है कि एक या दो शिक्षकों से ही पूरे विद्यालय की शिक्षा व्यवस्था चलवाई जा रही है।

गुणवत्ता की दृष्टि से तो स्थिति और भी खराब है एक ओर हम सभी के लिए शिक्षा का अभियान चला रहे है तो दूसरी तरफ लाखों बच्चों को केवल अक्षर ज्ञान करा देने की धोखा धड़ी कर रहे हैं और राष्ट्र की भावी पीढ़ी के भविष्य को अन्धकारमय बना रहे हैं। उच्च शिक्षा की स्थिति भी कुछ इससे अच्छी नहीं है। आखिर कब तक ऐसा चलेगा? आखिर कब तक हम भारत के पढ़े लिखे कहे जाने वाले प्रबुद्ध नागरिक भी अपनी ओर से कोई अपनी पहल न करके सरकार की तरफ निहारते रहेंगे।

हम यह उम्मीद करते हैं कि आप अपने नये तार्किक विचारों को हमारे शोध प्रकाशन में प्रकाशित करते हुए शिक्षा की गुणवत्ता को बनाए रखने वाले इस यज्ञ में अपना अमूल्य योगदान देते रहेंगे।

धन्यवाद.....

Rajeev Mishra

(डा0 राजीव मिश्रा)
सम्पादक

मुद्रक/प्रकाशक डा0 राजीव कुमार मिश्रा द्वारा ए. एण्ड एस. कम्प्यूटर्स, 127/1/61, डब्ल्यू–1, साकेत नगर, कानपुर से मुद्रित एवं 128/170, एच ब्लाक, किदवई नगर, कानपुर से प्रकाशित।
संपादक : राजीव कुमार मिश्रा, Mobile No. **9335332333, 9839074762**
Mail id: socialresearchfoundation2010@gmail.com, socialresearchfoundationkanpur@gmail.com, socialresearchfoundation@gmail.com, **website:** www.socialresearchfoundation.com